ऊर्जा और रूपान्तरण

प्रश्नकर्ता प विज्ञान और योग दोनों दृढ़ता पूर्वक कहते हैं कि जब एक सजीव शरीर जबरदस्त ऊर्जा के प्रभाव में आता है तब वहां तबदीली (म्यूटेशन) होती है। यह तब होता है जब विकिरण अत्यधिक प्रभावशाली होता है – वह शायद जीन्स में परिवर्तन लाता है। योग के अनुसार यह तब भी होता है जब चेतना में विचार को ऊर्जा की आग के सामने रखा जाता है। आपकी शिक्षाओं के सन्दर्भ में, क्या आप मानते हैं कि यह अर्थपूर्ण है?

प्रश्नकर्ता ब विकिरण विकृति लाता है। तबदीली (म्यूटेशन) विनाशकारी भी हो सकती है। 'लेज़र' किरण फौलाद और मांस दोनों का भेदन करती है। उसमें विनाश के साथ–साथ स्वस्थ करने की भी शक्ति होती है।

कृष्णमूर्ति मानवी ऊर्जा आप किसे कहेंगे? मनुष्य में ऊर्जा क्या है? हमें इसे बहुत सरल ढंग से देखें।

प्रश्नकर्ता प ऊर्जा विभिन्न स्तरों पर होती है। एक ऊर्जा शारीरिक स्तर पर होती है। इसके बाद मस्तिष्क खुद ही ऊर्जा का एक स्रोत है; वह विद्युत तरंगें भेजता है।

कृष्णमूर्ति सभी प्रकार की गति, विकिरण, विचार की कोई भी गतिविधि, कोई भी क्रिया ऊर्जा होती है। वह तीव्र कब बनती है? वह सबसे आश्चर्यजनक चीज़ें कब कर सकती है? कब उससे अविश्वसनीय चीज़ें करायी जा सकती हैं?

प्रश्नकर्ता प जब वह छितरायी नहीं होती। जब उसका संकेन्द्रीकरण हो।

कृष्णमूर्ति वह कब होता है? क्या क्रोध, घृणा, हिंसा के होते हुए वह होता है? महत्त्वाकांक्षा, जबरदस्त अभिलाषा जब होती है क्या तब वह होता है? या क्या वह तब होता है जब किसी कवि में प्रेरणा, ओजस्विता, लिखने की ऊर्जा होती है?

प्रश्नकर्ता प ऐसी ऊर्जा निश्चित रूप धारण कर लेती है, गतिहीन बन जाती है।

कृष्णमूर्ति हम इस प्रकार की ऊर्जा को जानते हैं। लेकिन जो ऊर्जा हमें मालूम है वह मानवी मन के भीतर परिवर्तन नहीं लाती। क्यों? यह ऊर्जा तब तीव्र होती है जब क्रिया की पूर्ति होती है। वह एक भिन्न आयाम की ओर कब चलती है? एक कलाकार या एक वैज्ञानिक अपनी प्रतिभा से ऊर्जा को तीव्र बनाता है और उसे अभिव्यक्त करता है। लेकिन उसके मन की प्रवृत्तियाँ, उसका स्वभाव इस ऊर्जा से नहीं बदल पाते।

प्रश्नकर्ता प इन सबमें हम कुछ चूक रहे हैं।

कृष्णमूर्ति आप पूछ रहे हैं कि ऊर्जा का कोई ऐसा गुण है जो मानवी मन का रूपान्तरण कर सके। यही आपका प्रश्न है। अब एक कलाकार, संगीतकार, एक लेखक में यह क्यों नहीं होता?

प्रश्नकर्ता प मुझे लगता है, ऐसा इसलिए है क्योंकि उनकी ऊर्जा का एक ही आयाम होता है।

कृष्णमूर्ति कलाकार होने के बावजूद वह महत्त्वाकांक्षी, लालची और साधारण मध्यवर्गी ही रह जाता है।

प्रश्नकर्ता स ऐसा आप क्यों कहते हैं कि लालच उस ऊर्जा के कार्यशील होने में बाधा डालता है? मनुष्य महत्त्वाकांक्षी हो सकता है लेकिन वह अच्छा भी है। यही मूलतत्त्व उसके अहम् का ढाँचा बनाते हैं।

कृष्णमूर्ति हम पूछ रहे हैं कि जब मनुष्य के पास वह ऊर्जा है, तब वह ऊर्जा आमूलाग्र परिवर्तन क्यों नहीं लाती?

प्रश्नकर्त्ता प मनुष्य में अपने निजी वातावरण में कार्य करने की ऊर्जा होती है। लेकिन उसके अस्तित्व के ऐसे विशाल क्षेत्र भी हैं जहां ऊर्जा गतिशील नहीं होती।

कृष्णमूर्ति मनुष्य ऊर्जा का उपयोग करता है, किसी एक दिशा में पूर्णतः कार्यरत होता है, और दूसरी दिशा में वह निष्क्रिय होता है। उसके अस्तित्व के एक हिस्से में ऊर्जा प्रसुप्त होती है और दूसरे हिस्से में वह क्रियाशील होती है।

प्रश्नकर्त्ता प मनुष्य की इन्द्रियां भी अंशतः ही उपयोग में लायी जाती हैं।

कृष्णमूर्ति वह एक खंडित मानव है। वह विभाजन क्यों होता है? एक टुकड़ा ज़बरदस्त क्रियाशील है, दूसरा बिल्कुल ही कार्य नहीं करता। एक भाग साधारण है, 'बूर्जुआ', क्षुद्र है। ये दोनों हिस्से सम्मिलित होकर सुसंगत ऊर्जा कब बनते हैं? ऊर्जा जो खण्डित नहीं होती? ऊर्जा जो न कि केवल एक स्तर पर पूर्णतः कार्यशील हो और दूसरे स्तर पर उसका 'वोल्टेज' कम हो।

प्रश्नकर्त्ता प जब इन्द्रियां पूर्णतः कार्यशील होती हैं।

कृष्णमूर्ति यह कब होता है? क्या वे तब पूर्ण रूप से कार्यशील होती हैं जब कोई जबरदस्त संकट पैदा होता है?

प्रश्नकर्त्ता प हमेशा नहीं सर। संकट में क्रिया आंशिक भी हो सकती है; सांप दिखते ही आप कूद सकते हैं लेकिन आप कँटीली झाड़ी में भी कूद पड़ सकते हैं।

कृष्णमूर्ति एक टुकड़ा, टुकड़ा कब नहीं रहता? क्या हम एक गति, एक क्रिया, एक परिवर्तन की परिभाषा में नहीं सोच रहे हैं? होने की गति को, कुछ बनने की गति को हम स्वीकारते हैं। विखण्डन को हम स्वीकारते हैं। कुछ बनने की गति हमेशा टुकड़ों की गति होती है। क्या ऐसी भी कोई गतिशीलता है जो इन श्रेणियों में नहीं आती? देखिए, जब कोई गति ही नहीं होती तब क्या होता है?

प्रश्नकर्त्ता प आपके इस प्रश्न को समझना मुझे हमेशा ही बड़ा मुश्किल लगा है। इस प्रश्न का स्वरूप ही दूसरे को, विपरीत को सूचित करता है।

प्रश्नकर्त्ता स प्रसुप्त गतिविधि को सचमुच कोई नहीं जानता।

कृष्णमूर्ति हमने शुरू में कहा था कि वहां विखण्डन है। एक भाग बहुत सक्रिय है और दूसरा निष्क्रिय है।

प्रश्नकर्त्ता ब कलाकार की ऊर्जा, उसका समूचा अस्तित्व एक ही आयाम में कार्यशील है। वहां बोध नहीं है।

कृष्णमूर्ति मुझे संदेह है। एक भाग सक्रिय है। आप कह रहे हैं कि दूसरा भाग अपने प्रति बिल्कुल ही सजग नहीं है।

प्रश्नकर्त्ता प कलाकार चित्र बनाता है, उसके स्त्री से प्रेम सबंध भी होते हैं। ये क्रियाएँ खंडित हैं ऐसा वह महसूस नहीं करता।

कृष्णमूर्ति हम उससे भी आगे जा चुके हैं। हम देखते हैं कि वह खण्डित है। वह टुकड़ों में कार्य करता है - एक सक्रिय है और दूसरा प्रसुप्त। उस प्रसुप्ति में क्रिया चल रही है। एक बहुत सक्रिय है और दूसरी क्रिया बहुत छोटी मात्रा में चल रही है। इसे हम देखते हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या यह ऊर्जा बढ़ सकती है ताकि मस्तिष्क की कोशिकाओं में परावृत्ति आ सके?

प्रश्नकर्त्ता प क्या वह सुप्त हिस्से को साथ में लेकर उसका ढाँचा बदल सकती है ताकि दोनों में रूपान्तरण हो?

कृष्णमूर्ति हो सकता है कि मैं एक महान् मूर्तिकार हूँ। मेरा एक भाग प्रसुप्त है। आप पूछते हैं, कि क्या ऐसा परावृत्ति हो सकती है जो केवल उस प्रसुप्त में ही नहीं बल्कि उस ऊर्जा में भी हो जो उस मूर्तिकार के बनने में लगी है! प्रश्न यह है कि क्या यह मुझे स्वीकार्य है कि शायद मैं मूर्तिकार न रहूँ। क्योंकि यह भी हो सकता है। प्रत्यक्ष मस्तिष्क की कोशिकाओं में परिवर्तन लाने की इस समस्या में जब मैं जाता हूँ,

तो ऐसा हो सकता है कि मैं हमेशा के लिए मूर्तिकार न रहूँ। लेकिन मेरे लिए मूर्तिकार बने रहना बहुत महत्त्वपूर्ण है। मैं उसे छोड़ना नहीं चाहता हूँ।

प्रश्नकर्त्ता प हम मूर्तिकार को यहीं छोड़ देते हैं। हम यहां आपके सम्मुख हैं और आप कहते हैं देखिए, मस्तिष्क-कोशिकाओं की संरचना में परिवर्तन याने सारी निपुणता का, सारी सार्थक क्रियाओं का अन्त हो सकता है। आप जो कह रहे हैं वह हमें स्वीकार्य है।

कृष्णमूर्ति यह ठीक है। अगर आप उसे छोड़ देने के लिए तैयार हैं, तब क्या होता है? इसका मतलब है कि आप निपुणता, पूर्ति, 'मैं' के स्थायीकरण को छोड़ देते हैं। तब ऊर्जा द्वारा मस्तिष्क कोशिकाओं में यह तबदीली कब होती है? आप देखिए कि जहाँ निपुणता के माध्यम से, अन्य धाराओं के माध्यम से ऊर्जा का छितराव हो रहा है, वहाँ ऊर्जा पूरी तरह से नहीं रह पाती। ऊर्जा की जब कोई भी गतिविधि नहीं होती है तब मुझे लगता है कि कुछ होता है, तब उसका प्रस्फोटन अनिवार्य है।

मुझे लगता है, तब मस्तिष्क-कोशिकाओं का गुण ही बदल जाता है। इसलिए मैं पूछ रहा था कि हम हमेशा गति की परिभाषा में ही क्यों सोचते हैं? जब भीतरी या बाहरी, किसी भी प्रकार की गति नहीं होती, जब किसी भी अनुभूति की कोई माँग नहीं होती, न प्रज्ञा जागरण की चाह, न कोई और तलाश; किसी प्रकार की कोई गति नहीं होती, तब वह ऊर्जा अपनी चरम बिन्दु पर होती है। इसका मतलब है सभी गतिविधियों को नकारना चाहिए। ऐसा जब होता है ऊर्जा पूरी तरह से निश्चल हो जाती है--यही मौन है। जैसा कि हम उस दिन कह रहे थे जब मौन होता है, तब मन अपना रूपान्तरण करता है। जब वह पूरी तरह से परती होता है, जब कोई भी उसे नहीं जोतता, तब वह गर्भ की तरह निश्चल होता है।

मन गतिशीलता की नस-नाड़ी है, जब उस गति का कोई रूप नहीं होता, कोई 'मैं' नहीं होता, कोई ख्याल या आभास नहीं होता, कोई प्रतिमा नहीं होती, तब वह पूर्णतः निश्चल होता है, उसमें स्मृति नहीं होती है। तब मस्तिष्क-कोशिकाओं में परिवर्तन आता है। मस्तिष्क कोशिकाओं को समय के दायरे में क्रियाशील रहने की आदत सी होती है। वे समय का अवशेष होती हैं और समय गति है, वह गति जो एक अन्तराल के भीतर है जो समय अपने चलन से बनाता है। मन जब यह देखता है, सारी गतिविधियाँ जो कि समय का भाव पैदा करती है, उनकी विफलता को देखता है तब सारी गति खत्म हो जाती है। जब मन सभी प्रकार की गति को पूर्णतया नकारता है, अतः सारा समय, सारा विचार, पूरी स्मृति को अस्वीकार कर देता है, तब वहाँ अबाधित निश्चलता होती है, सापेक्ष निश्चलता नहीं।

इसीलिए प्रश्न यह नहीं है कि तबदीली (म्यूटेशन) को कैसे लाया जाय बल्कि मस्तिष्क-कोशिकाओं की संरचना के बारे में पूछताछ करना। मस्तिष्क-कोशिकाओं की किसी भी प्रकार की गति समय को ही सातत्य देती है, इसका बोध सारी गति का अन्त कर देता है।

गति हमेशा अतीत में होती है या तो फिर भविष्य में; वह अतीत से वर्तमान में होते हुए भविष्य की ओर जाती है। हमें जो मालूम है वह यही सब कुछ है और इस गति में हम परिवर्तन लाना चाहते हैं। हम गति चाहते हैं और उस गति में परिवर्तन भी चाहते हैं और इसीलिए मस्तिष्क-कोशिकाएं वैसी ही बनी रहती है। (विराम) यह आश्चर्यजनक रूप से सरल है। मुझे पता नहीं कि आप इसे देख रहे हैं या नहीं। हम सब उसे जटिल बनाना चाहते हैं। गति को रोकने का कोई भी प्रयास असंगति है और इसलिए समय है और इसलिए परिवर्तन बिल्कुल नहीं है। सभी जिज्ञासुओं ने उच्चतर गति के बारे में कहा है, श्रेणीबद्ध गति के बारे में कहा है। प्रश्न यह है कि क्या मन अपनी सभी प्रकार की गतियों को नकार सकता है?

आप देखिए, अपने मस्तिष्क को सावधानी से देखते हुए आप पाते हैं कि वहाँ एक केन्द्र है जो पूर्णतया निश्चल है और फिर भी जो कुछ भी आसपास है, बस-गाड़ी, पक्षी, उसे वह सुन रहा है। हम बाहरी कोलाहल को रोकना चाहते हैं लेकिन भीतरी शोर को जारी रखते हैं। हम बाहरी गतिविधि को रोकना चाहते हैं लेकिन भीतरी क्रिया-कलापों को बनाए रखते हैं। जब किसी भी प्रकार की गति नहीं होती, तब ऊर्जा का ज़बरदस्त केन्द्रीकरण होता है। इसलिए तबदीली (म्यूटेशन) का अर्थ है गति को समझ लेना और मस्तिष्क-कोशिकाओं की गतिशीलता का अन्त हो जाना।

नई दिल्ली
२१ दिसम्बर १६७०